

1092 - क्या पाँच दैनिक नमाज़ों का कुरआन में वर्णन है ?

प्रश्न

अल्लाह तआला ने फरमाया :

(فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ [الروم : 17-18])

“तो अल्लाह की स्तुति किया करो, जबकि तुम शाम करो और जब सुबह करो। तथा आकाश और धरती में सभी तारीफों के लायक वही है, तीसरे पहर और दोपहर के समय भी उसकी पवित्रता बयान करो।” (सूरतुर रूम : 17, 18).

इन आयतों में चार नमाज़ों का उल्लेख किया गया है, जबकि मुसलमान लोग पाँच नामाज़ें पढ़ते हैं, सुन्नतें इनके अतिरिक्त हैं। तो पाँचवीं नमाज़ का वर्णन क्यों नहीं है ? मैं एक मुसलमान हूँ और प्रश्न के प्रति गंभीर हूँ, और मैं कतई कुरआन को गलत ठहराने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

इस आयत की व्याख्या में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्होंने ने कहा : पाँच नमाज़ें कुरआन में वर्णित हैं। तो उनसे पूछा गया : कहाँ ? तो उन्होंने ने फरमाया : “फ-सुब्हानल्लाहि हीना तुम्सूना” (अर्थात् तो अल्लाह की तस्बीह व पाकी बयान करो जब तुम शाम करो) मगरिब और इशा की नमाज़, और “व-हीना तुसबेहूना” (यानी और जब तुम सुबह करो) फज्र की नमाज़, “व-अशिय्यन” (अर्थात् और तीसरे पहर को) अस्त्र की नमाज़, “व-हीना तुजहेरूना” (अर्थात् और जब तुम दोपहर करो) जुहर की नमाज़।

तथा यही बात कुरआन के भाष्यकारों में से ज़हहाक और सईद बिन जुबैर ने भी कही है।

तथा कुछ लोगों ने कहा है कि आयत में केवल चार नमाज़ों का वर्णन है, और इशा की नमाज़ का आयत में उल्लेख नहीं है, बल्कि उसका वर्णन सूरत हूद की आयत संख्या 114 में किया गया है, और वह अल्लाह तआला का यह फरमान है :

وَرُفَا مِنَ اللَّيْلِ

“और रात की कुछ घड़ियों में भी” (सूरत हूद : 114).

जबकि अधिकांश मुफस्सरीन पहले कथन पर हैं, नहूहास रहिमहुल्लाह ने फरमाया : “अहले तफसीर का यह मत है कि यह

आयत : فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ : नमाज़ के बारे में है।

तथा इमाम अल-जस्सास रहिमहुल्लाह ने फरमाया : अल्लाह तआला ने फरमाया :

[إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا] النساء : 103

“निःसंदेह नमाज़ मुसलमानों पर निर्धारित वक़्तों फर्ज़ की गई।” (सूरतुन्निसा: 103)

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने ने फरमाया : “नमाज़ के लिए हज्ज के समय के समान एक समय है।” तथा अल्लाह तआला के फरमान : “भौकूता” का अर्थ यह है कि वह कुछ निर्धारित व निश्चित ज्ञात समयों में अनिवार्य है। तो इस आयत में समय का उल्लेख सार रूप से किया गया है और कुरआन में दूसरे स्थानों पर उसको स्पष्ट रूप से वर्णन किया है बिना उसके प्रारंभिक और अंतिम समय को निर्धारित किए हुए। तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुबानी उसके निर्धारित समय और मात्रा को स्पष्ट किया गया है। अल्लाह तआला ने कुरआन में नमाज़ के समय का जो उल्लेख किया है उसी में से अल्लाह तआला का यह फरमान है :

[أَقِمِ الصَّلَاةَ لِدُلُوكِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ] الإسراء : 78

“नमाज़ कायम करें सूरज ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक, और फज्र (प्रातः) की नमाज़ भी, बेशक फज्र की नमाज़ (फरिश्तों के) हाज़िर होने का वक़्त है।” (सूरतुल इस्रा: 78).

मुजाहिद ने इब्ने अब्बास से उल्लेख किया है कि उन्होंने ने : لِدُلُوكِ الشَّمْسِ “लि-दुलूकिशशम्स” की व्याख्या में फरमाया :

“जब सूरज आसमान के पेट से जुहर की नमाज़ के लिए ढल जाए।”

إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ फरमाया : “मगरिब की नमाज़ के लिए रात का प्रकट होना।” इसी प्रकार इब्ने उमर से “लि-दुलूकिशशम्स” के बारे में वर्णित है कि वह सूरज का ढलना है ... तथा अल्लाह तआला ने फरमाया :

[وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيْ النَّهَارِ وَزُلْفًا مِنَ اللَّيْلِ] هود : 114

“और आप नमाज़ कायम करें दिन के दोनों किनारों में और रात की कुछ घड़ियों मेंओ” (सूरत हूद: 114)

अम्र ने अल-हसन से अल्लाह के कथन طَرَفَيْ النَّهَارِ के बारे में रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा : “फज्र की नमाज़, और दूसरा किनारा जुहर और अम्र की नमाज़ें हैं।” तथा وَ زُلْفًا مِنَ اللَّيْلِ के बारे में फरमाया : “मगरिब और इशा की नमाज़ है।” इस कथन के आधार पर यह आयत पाँचों नमाज़ों को सम्मिलित है ... तथा लैस ने अल-हकम के माध्यम से अबू अयाज़ से वर्णन किया है कि उन्होंने ने कहा : इब्ने अब्बास ने फरमाया : “यह आयत नमाज़ के समयों को समेटे हुए है :



तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने फरमाया : सावधान ! मुझे कुरआन और उसके साथ ही उसके समान चीज़ दी गई है . . .” इसे इमाम अहमद (हदीस संख्या : 16546) ने रिवायत किया है, और वह एक सहीह हदीस है। अतः अहकाम चाहे कुरआन में वर्णित हुए हों या सुन्नत (हदीस) में, सबके सब सत्य और सभी सही (विशुद्ध) हैं, और सबका स्रोत एक ही है और वह सर्वसंसार के पालनहार की ओर से वह्य (प्रकाशना) है।